Tender Heart High School, Sector- 33-B, Chandigarh.

कक्षा- नौवीं

विषय- हिन्दी साहित्य   शिक्षिका- श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक - एकांकी संचय

पाठ- ४ 'सूखी डाली' (एकांकी)   लेखक - 'उपेन्द्रनाथ अश्क'

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक एकांकी संचय की पृष्ठ संख्या ३१ पर दिए पाठ-४ 'सूखी डाली' नामक एकांकी का अध्ययन करेंगे।

बच्चो ! आज हम पाठ-४ 'सूखी डाली' को आरंभ करने जा रहे हैं इसलिए आप सभी अपनी-अपनी पुस्तक 'एकांकी संचय' निकाल लें और पाठ-४ पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। पाठ के मध्य आपसे पाठ से ही संबंधित कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे जिनके उत्तर आप तभी दे पाएँगे यदि आप पाठ को ध्यानपूर्वक सुनेंगे व समझेंगे। अतः आपका ध्यान पाठ की ओर ही केन्द्रित रहे। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

उपेन्द्रनाथ 'अश्क' द्वारा रचित एकांकी 'सूखी डाली' एक ऐसे संयुक्त परिवार की कथा है जिसमें मुखिया की सूझ-बूझ व परिवार के सदस्यों के बीच आपसी सामन्जस्य से परिवार के द्वारा परिवार को जोड़े रखने का चित्रांकन किया गया है। एकांकीकार का उद्देश्य इस एकांकी के माध्यम से वर्तमान समय में संयुक्त परिवार के महत्त्व को दर्शाना है। यद्यपि संयुक्त परिवार में कुछ खटटे-

मीठे फल आते रहते हैं, लेकिन हमें संयम व पारस्परिक सहयोग में सद्भावना बनाए रखना चाहिए। परिवार के प्रत्येक सदस्य की भावनाओं का सम्मान करते हुए हमें अपनी सोच और व्यवहार में समय के साथ आधुनिकता का समावेश भी करना चाहिए। परिवार में नए आए सदस्यों व अन्य सदस्यों को आपसी सामंजस्य बैठाने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि संगठन में ही शक्ति है। अलग-अलग होकर हमारा विकास बाधित और व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है। अतः आपसी सहयोग, प्रेम, दया, आदर आदि मूल्यों का जीवन में विकास करते हुए मिलकर रहने की प्रेरणा देना ही इस एकांकी का उद्देश्य है।

इस एकांकी में अनेक पात्र हैं। दादा जी मूलराज एकांकी के मुख्य पात्र हैं। इनके तीन पुत्र हैं। बड़ा लड़का शहीद हो चुका है। मँझले बेटे का नाम कर्मचन्द है तथा छोटा लडका। इन तीनों की पत्नियों को बडी भाभी, मँझली भाभी एवं छोटी भाभी कहकर पुकारा जाता है। दादा जी के तीन पोते हैं। परेश जो दादा जी का सबसे छोटा पोता है और इंदु पोती है। पोते की बहुओं को बड़ी बहू, मँझली बहू और छोटी बहू के नाम से एकांकी में पुकारा जाता है। छोटी बहू परेश की पत्नी है जिसका नाम बेला है। यह इस एकांकी की मुख्य पात्रा है। इसके अतिरिक्त मल्लू, भाषी, जगदीश दादा जी के पोतों के ही बच्चे हैं। अर्थात् पड़पोते हैं। इनके अतिरिक्त अन्य पात्रों में रजवा जो मिश्रानी है, पारो, मलावी पड़ोसिन है तथा वंशीलाल मलावी का देवर है। आइए, मुख्य पात्रों के बारे में विस्तार से जान लेते हैं।

★ पात्र - परिचय

★ दादा जी मूलराज - दादा जी मूलराज एकांकी के सबसे प्रमुख और वरिष्ठ (श्रेष्ठ, सबसे बड़े, पूज्य, महान) पात्र हैं। उनकी आयु 72 वर्ष है। इतनी आयु होने पर भी वे

पूर्णतः स्वस्थ हैं। वे एक परिश्रमी, बुद्धिमान, दूरदर्शी तथा अनुभवी व्यक्ति हैं। उन्होंने पूरे परिवार को अपनी सूझ-बूझ से एक सूत्र में बाँधकर रखा है। परिवार का कोई सदस्य उनके निर्णय की अवहेलना नहीं करता। वे मुखिया के कर्तव्यों से भली भाँति-परिचित हैं। वे सबके लिए प्रेरणास्रोत हैं।

* छोटी बहू बेला - बेला एकांकी की प्रमुख महिला पात्र है। कथानक का संपूर्ण घटनाक्रम बेला के ईद-गिर्द ही घूमता है। वह दादा जी के संयुक्त परिवार की छोटी बहू और परेश की पत्नी है। वह एक संपन्न व प्रतिष्ठित परिवार की सुशिक्षित व इकलौती संतान है। वह अपने ससुराल में मायके की अक्सर प्रशंसा करती है। उसकी यह बात परिवार के सदस्यों को पसंद नहीं आती। वह मूलराज जी के संयुक्त परिवार में सामंजस्य नहीं बैठा पाती और सबके उपहास व व्यंग्य बाणों की पात्र बन जाती है। इसलिए वह परिवार से अलग रहने के लिए परेश से कहती है लेकिन दादा जी के हस्तक्षेप (दखलंदाज़ी) से परिवार के सदस्यों में बदलाव देख वह सबके साथ मिलकर कार्य करती है। अतः कह सकते हैं कि वह एक समझदार, पढ़ी-लिखी, कुशल एवं आधुनिक विचारों से परिपूर्ण है।

* परेश - परेश दादा जी का सबसे छोटा पोता है। वह एक शिक्षित और संस्कारी युवक है। वह एक सरकारी नौकर है, जिसकी अभी-अभी नायब तहसीलदार के रूप में अपने ही कस्बे में नियुक्ति हुई है। उसका विवाह लाहौर के एक संपन्न एवं प्रतिष्ठित परिवार की सुशिक्षित, बुद्धिमान और संस्कारी लड़की से हुआ है। परेश एक बुद्धिमान युवक है इसके अतिरिक्त वह परिवार में सामंजस्य (अनुकूलता, तालमेल) स्थापित करने वाला पुरुष पात्र है।

* इंदु - इंदु छोटी भाभी की बेटी और परेश की बहन है। वह दादा जी की लाडली है। इंदु ने केवल प्राथमिक विद्यालय तक ही शिक्षा ग्रहण की है। छोटी बहू बेला के

आने से पहले तक वह घर की सबसे अधिक शिक्षित महिला थी। इंदु को बेला का बार-बार अपने मायके की तारीफ़ करना पसंद नहीं था, जिस कारण उन दोनों के बीच नोंक-झोंक होती रहती है। वह बड़ों का सम्मान करने वाली युवती है। दादा जी के समझाने पर वह छोटी बहू का भी सम्मान करना शुरू कर देती है। अतः कह सकते हैं कि इंदु शिक्षित, सहृदयी, अन्याय के विरुद्ध खड़ी होने वाली एक हठी स्वभाव की युवती है।

* कर्मचन्द - कर्मचन्द दादा जी का मँझला बेटा है। वह पितृभक्त, शांत स्वभाव और आज्ञाकारी पुत्र है। कर्मचन्द घर की समस्याओं को पिता जी के सम्मुख रखकर उनका समाधान खोजने की कोशिश करता है। उसकी पितृभक्ति का प्रमाण दूसरे दृश्य के आरंभ में ही मिलता है जब वह दादा जी के पास बैठकर उनके पाँव दबा रहा होता है। वह अपने छोटे भाई के साथ ज़मीन, फार्म, डेयरी और चीनी के कारखाने के काम की देखभाल भी करता है।
* बड़ी भाभी - बड़ी भाभी घर की सबसे बड़ी बहू है, जिनके पति वर्ष 1914 के महायुद्ध में शहीद हो गए थे। वह एक शांत स्वभाव, सहृदयी, और नौकरों को भी घर का सदस्य समझने वाली महिला है।
* मँझली भाभी - मँझली भाभी कर्मचन्द की पत्नी है। वह दादा जी के आदेश का बड़ी निष्ठा के साथ पालन करती है। वह रजवा को लेकर भी चिंतित है। इस प्रकार वह भावुक, सहृदयी तथा बड़ों का सम्मान करने वाली स्त्री है।
* छोटी भाभी - छोटी भाभी परेश और इंदु की माँ तथा बेला की सास हैं। वह एक भावुक, सहृदयी, कर्मठ एवं शांत स्वभाव की महिला हैं। उन्हें अपने परिवार पर गर्व है, जिसका वर्णन करते हुए वह कहती हैं कि हमारे घर में तो मिलकर रहना, बड़ों का आदर करना, नौकरों पर दया करना उनके परिवार के संस्कार हैं।
* मँझली बहू - मँझली बहू एक हँसमुख स्वभाव की स्त्री है। वह इंदु के साथ मिलकर बेला का मज़ाक उड़ाती है लेकिन

दादा जी के समझाने पर कि मज़ाक उतना ही करो कि दूसरे उसे सहन कर सकें। घर के लोगों के पूर्णतया घर का अंग बनने से पहले उन्हें अपनी हँसी का निशाना मत बनाओ। वह समझ जाती है और अपने व्यवहार में सुधार लाती है।

* रजवा - रजवा अथवा मिश्रानी घर की नौकरानी है। उनकी कई पीढ़ियाँ इसी घर में काम कर चुकी हैं। रजवा से पहले उसकी सास इस घर में काम करती थी और अब रजवा की बहू भी इसी घर में काम करती है। उसका घर के प्रति आदर भाव और अपनत्व की भावना है। इसके अतिरिक्त वह समझदार, विश्वसनीय, आज्ञाकारी नौकरानी होने के साथ एक भावुक स्त्री है

बच्चो ! पात्र - परिचय के बाद एकांकी के पहले दृश्य को विस्तार से समझने का प्रयास करते हैं। पहले दृश्य के आरंभ में दादा जी मूलराज के परिवार की व्यवस्था तथा रहन - सहन के बारे में बताया गया है। आज के प्रगतिशील समाज में मानव अपनी निजी स्वतन्त्रता को अराजकता की हद तक महत्त्व देता है अर्थात् यदि वह विरोध करना चाहे तो वह परिवार या समाज का भी विरोध करने को तैयार हो जाता है। और ऐसी व्यवस्था जो नियम व कानून का बंधन रखे ऐसी व्यवस्था को आज के सभ्य समाज में निंदनीय माना जाता है। दादा मूलराज जी भी अपने समस्त कुटुंब (परिवार) को एक जुट बनाए रखने में अपना पूरा योगदान देते हैं और उस पर अपना प्रभुत्त्व पूर्ण रूप से बनाए रखना चाहते हैं अर्थात् दादा जी तानाशाह की भाँति परिवार के सदस्य से अपनी बात मनवाते हैं। उनका परिवार एक महान् वट वृक्ष की भाँति है और वे स्वयं वट वृक्ष की भाँति अपने परिवार को छाया देने के लिए अर्थात् संभालने के लिए अटल खड़े हैं। जैसे वट वृक्ष की लंबी - लंबी डालियां आँगन में बड़े - बड़े छाते की भाँति धरती को ढके हुए रहती हैं और अनेकों घोंसलों को अपने पत्तों में छिपाए रखता है। वर्षा, तूफ़ान, आँधियों का सामना करके भी वह अटल खड़ा है। उसी प्रकार दादा जी ने अपने विशाल

कक्षा - नौवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा
विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ-५ 'सूखी डाली')

परिवार को एकता के सूत्र में बाँधा हुआ है। वट वृक्ष की संगति में रहने के कारण दादा जी भी वट वृक्ष की तरह हो गए हैं। 72 वर्ष की आयु होने पर भी उनका शरीर अभी तक झुका नहीं है। उनकी सफ़ेद लंबी दाढ़ी नाभि को छूती हुई ऐसी लग रही है मानो ज़मीन को छूने का प्रण किए बैठी है। दादा जी बड़ा बेटा 1914 के महायुद्ध में सरकार की ओर से लड़ते-लड़ते शहीद हो गया। इसके बदले में सरकार ने दादा जी को एक मुरब्बा (25 एकड़) ज़मीन दी लेकिन दादा जी ने अपने साहस, परिश्रम, निष्ठा और दूर-दर्शिता से दस मुरब्बे ज़मीन बना ली। इसी ज़मीन पर बने फार्म, डेयरी तथा चीनी के कारखानों की देखभाल उनके दो बेटे और उनके पोते करते हैं। छोटा पोता परेश जो इसी कस्बे में नायब तहसीलदार होकर आया है। उसका विवाह लाहौर के प्रतिष्ठित तथा सम्पन्न कुल की सुशिक्षित लड़की से हुआ। एक ओर तो सुशिक्षित बहू के आने से दादा जी का गाँव में आदर बढ़ गया और दूसरी ओर परिवार के लिए संकट भी पैदा हो गया। तीनों बहुएँ जो घर में बड़ी भाभी, मँझली भाभी तथा छोटी भाभी के नाम से पुकारी जाती हैं, सीधी-सादी महिलाएँ हैं। उन सब में उनकी पोती इंदु जिसने प्राइमरी स्कूल तक सफलतापूर्वक शिक्षा प्राप्त की है, दादा जी की लाडली है। बेला के आने से पहले इंदु को ही सबसे अधिक पढ़ी-लिखी समझा जाता था। बेल ग्रेजुएट (बी.ए.) है। कुटुंब में आने से कुटुंब रूपी तालाब में तूफ़ान-सा आ गया है। ऐसा लगता है जैसे स्थिर पानी में किसी ने बड़ी-सी ईंट फेंक दी हो। इस प्रकार परिवार में हलचल मच गई है।

बच्चो ! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट के लिए रोककर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे। प्रश्न इस प्रकार हैं।

प्रश्न 1. दादा जी की तुलना वट वृक्ष से क्यों की गई है?

प्रश्न 2. 'पूर्णरूप से अपना प्रभुत्त्व जमाए' प्रस्तुत पंक्ति का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि किसने और किस प्रकार अपना प्रभुत्त्व जमाए रखा है?

कक्षा - नौवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा
विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ-५ 'सूखी डाली')

बच्चो! प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए दी गई अवधि अब समाप्त हो चुकी है। आशा है कि आपने पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। उन प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. दादा जी की तुलना वट वृक्ष से इसलिए की गई है क्योंकि जिस प्रकार वट वृक्ष की कई शाखाएँ हैं और वे सब एक वृक्ष के कारण आपस में जुड़ी हुई हैं, उसी प्रकार उन्होंने भी अपने विशाल परिवार को एकता के सूत्र में बाँधकर अपने संयुक्त परिवार को बचाए रखा है। वे चाहते थे कि उनका परिवार कभी पृथक न हो।

उत्तर 2. 'पूर्णरूप से अपना प्रभुत्व जमाने' का अर्थ है किसी वस्तु पर अपना अधिकार करना। दादा जी ने भी परिवार पर अपना एकाधिकार स्थापित किया हुआ है। दादा जी एक तानाशाह की भाँति परिवार के प्रत्येक सदस्य से अपनी बातें मनवाते हैं। कोई भी सदस्य उनके निर्णय के विरुद्ध जाने की चेष्टा तक नहीं करता।

बच्चो! अब एकांकी को आगे बढ़ाते हुए समझने का प्रयास करते हैं। पर्दा इमारत के बरामदे में खुलता है, जिसे घर की स्त्रियों का हिस्सा माना जाता है। सारा दिन इस बरामदे में कोलाहल मचा रहता है। यहीं घर की स्त्रियाँ धूप लेने, चरखा चलाने, गप्पे लड़ाने तो कभी लड़ाई-झगड़ा भी करती हैं। दीवार के बाएँ कोने में एक छोटी-सी गैलरी है। पहले मँझली बहू और बड़ी बहू के कमरे हैं। फिर मँझली भाभी और बड़ी भाभी का कमरा है। छोटी भाभी का कमरा दाईं ओर है। छोटी बहू का कमरा ऊपर की छत पर है। दीवार के साथ ही दो तख्त बिछे हैं। एक पुराने फैशन की बड़ी आराम कुर्सी भी सामने की दीवार के साथ लगी हुई है। दोपहर होने में अभी काफी देर है। अत: बरामदे में शांति छाई है। गैलरी से स्त्रियों के जल्दी-जल्दी बात करने की आवाज़ें आ रही हैं।

पर्दा खुलने के कुछ क्षण बाद इंदु गुस्से में प्रवेश करके तख्त पर बैठ जाती है तभी बड़ी बहू शांत भाव से उसके पास आकर कंधे पर हाथ रखकर इंदु से नाराज़गी का

कारण पूछती है। इंदु छोटी बहू बेला के बारे में बताती है कि बेला हमेशा यही कहती रहती है कि मेरे मायके में ऐसा होता है, वैसा होता है। उसे (बेला को) लगता है कि उसके मायके वाले सुशिक्षित और प्रतिष्ठित हैं और हम मूर्ख गँवार और अशिष्ट हैं। फिर इंदु ने बड़ी बहू से यह भी कहा कि बेला ने मिश्रानी जिनका नाम रजवा है, उसे काम से हटा दिया है। उसका (बेला का) कहना है कि मिश्रानी को काम करने का सही तरीका मालूम नहीं है। इनके काम काज करने का ढंग बेला को पसंद नहीं है। उसने रजवा के हाथों से झाड़ू छीन लिया और कहा कि हट तू, मैं सब कुछ कर लूँगी। अभी तो तुझे साफ़ करने का ढंग भी पता नहीं है। इंदु ने बताया कि मैंने भाभी को समझाया भी और कहा कि भाभी, नौकरों से काम लेने की तमीज़ होनी चाहिए। यह आक्षेप (व्यंग्यपूर्ण आरोप) बेला न सुन सकी और उसने इंदु से कहा कि वह तमीज़ तो बस आप लोगों को ही है। इंदु ने नौकरों के कामकाज में कमी निकालने वाली भाभी के व्यवहार पर टिप्पणी करते हुए कहा कि तुम तो लड़ती हो। मैं तो केवल यह कहना चाह रही थी कि नौकर से काम लेने का ढंग होता है।

बच्चो! आज हम अपनी इस एकांकी को यहीं विराम देते हैं। आप सभी इस एकांकी को पृष्ठ संख्या 52 तक पुनः पढ़ेंगे एवं समझेंगे।

* **गृहकार्य**

"मेरे मायके में यह होता है, मेरे मायके ------ मूर्ख गँवार, असभ्य हैं"

प्रश्न (क) प्रस्तुत अवतरण किस एकांकी से लिया गया है? उपर्युक्त पंक्तियाँ किसने, किससे, किस संदर्भ में कही हैं?

प्रश्न (ख) 'वह किसी को कुछ समझती ही नहीं' - 'वह' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है? उसके मायके में किस प्रकार का वातावरण था?

प्रश्न (ग) उसके मायके तथा ससुराल के वातावरण में क्या अंतर है?

प्रश्न (घ) उसका मन ससुराल में क्यों नहीं लगता? वह अपनी गृहस्थी अलग बसाने के लिए क्या चाहती है?

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]